

महाकवि बाणभट्ट विरचित

“कादम्बरी में वैदिक प्रभाव”

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
के

श्रद्धानन्द वैदिक शोध केन्द्र में

पी-एच० डी० शोधोपाधि

हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध की

संक्षेपिका



निर्देशक :

डॉ० महावीर अग्रवाल, डी० लिट०

प्रोफेसर संस्कृत विभाग

निदेशक, वैदिक शोध केन्द्र

कुलसचिव

शोधार्थिनी :

श्रीमती सुमन चावला

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

दिसम्बर 2002

महाकवि बाणभट्ट विरचित

“कादम्बरी में वैदिक प्रभाव”

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
के

श्रद्धानन्द वैदिक शोध केन्द्र में

पी-एच० डी० शोधोपाधि

हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध की संक्षेपिका



निर्देशक

डॉ० महावीर अग्रवाल, डी० लिट०
प्रोफेसर संस्कृत विभाग
निदेशक, वैदिक शोध केन्द्र
कुलसचिव

शोधार्थिनी :

श्रीमती सुमन चावला

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

दिसम्बर 2002

कौटिलीय धर्मशास्त्र की व्याख्या

“अथवा कौटिलीय धर्मशास्त्र”

संस्कृत भाषा में लिखित ग्रन्थ

के

प्रो. ए. ए. कौटिलीय धर्मशास्त्र

श्री. ए. ए. कौटिलीय धर्मशास्त्र

प्रो. ए. ए. कौटिलीय धर्मशास्त्र

अथवा कौटिलीय धर्मशास्त्र



गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

हरिद्वार, उत्तरांचल प्रदेश



गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

हरिद्वार, उत्तरांचल प्रदेश

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

हरिद्वार, उत्तरांचल प्रदेश

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

संस्कृत भाषा में लिखित ग्रन्थ

2003, प्र. सं. 1

शोध-संक्षेपिका

अनन्त, असीम विश्व में मनुष्य ही अपनी बुद्धि के वैभव से सम्पन्न प्राणी है। वह अपने भावों की अभिव्यक्ति किसी भाषा के माध्यम से करता है। इस पृथिवी पर लगभग पाँच अरब मनुष्य एक हजार से भी अधिक भाषाओं के द्वारा अपने विचारों का परस्पर आदान प्रदान करते हैं। जिनमें प्रायः सौ भाषाएँ अधिक प्रचलित तथा समृद्ध साहित्य से सम्पन्न हैं।

हमारे राष्ट्र भारतवर्ष की प्राचीनतम भाषा संस्कृत है, इस का प्रादुर्भाव लाखों वर्ष पूर्व हुआ है। इसके साथ विश्व की अनेक भाषाओं ने जन्म लिया और उनमें से अधिकांश भाषाएँ अन्धकार के गर्त में समा गयी, हिब्रू, लेटिन, अरबी आदि कुछ भाषाएँ ही अपने कुछ परिवर्तित रूप में विद्यमान हैं। अंग्रेजी फ्रेंच, जर्मनी, चीनी, फारसी, उर्दू आदि का वर्तमान स्वरूप परिवर्तित स्वरूप ही है।

विश्व की प्राचीन समृद्ध भाषाओं में संस्कृत भाषा परम परिष्कृत स्वरूप वाली एक समृद्ध भाषा है। इसका साहित्य अत्यन्त विशाल है, विश्व का प्राचीनतम लिखित रूप में उपलब्ध ग्रन्थ 'ऋग्वेद' संस्कृत भाषा की ही अमूल्य निधि है। वेद, वेदांग, ब्राह्मण आरण्यक, उपनिषद् पुराण, स्मृति, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, काव्य, नाटक, कथा साहित्य आदि अनेक विद्याओं में विभक्त विशाल वाङ्मय इसकी समृद्धि का परिचायक है। जिनमें से अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं तथा अनेक पाण्डुलिपि रूप में विशिष्ट पुस्तकालयों में प्रकाशन की प्रतीक्षा में संघर्षरत हैं।

भारतीय संस्कृति का मूल परिचायक वाङ्मय वैदिक साहित्य है। 'वेदोऽखिलं धर्ममूलम्' के अनुसार हिन्दू संस्कृति एवं धर्म का मूल वेद ही हैं। मीमांसा, वेदान्त, सांख्य, योग न्याय वैशेषिक

1915-1919

1915-1919

1915-1919

1915-1919

1915-1919

आदि वेदांग, मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य आदि स्मृतियाँ, ईश, केन, मण्डूक आदि उपनिषद् ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, पारस्कर आदि सूत्र ग्रन्थ आदि वेदों पर ही आधारित है। वेदों के मन्तव्य को ही पुराणों में भी अनेक प्रकार से अभिव्यक्त किया है। वैदिक साहित्य गद्य और पद्य दो रूपों में उपलब्ध है।

मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति को अधिक संवेदनीय बनाने के लिए अधिक सुन्दर अलंकृत तथा हृदयङ्गम भाषा का प्रयोग करता है। इस मनोरम भाषा के स्वरूप को काव्य संज्ञा प्रदान की गयी है।

काव्य की दो विधाएँ हैं।

१. गद्य

२. पद्य

३. मिश्रित या चम्पू।

मनुष्यों की प्रारम्भिक बोलचाल की भाषा गद्य रूप में ही रही होगी किन्तु उपलब्ध साहित्य से संकेत मिलता है। प्रथम पद्य साहित्य का ही प्रचलन हुआ, क्योंकि पद्यों का कण्ठस्थ सरल था, ऋग्वेद, सामवेद का अधिकांश भाग पद्यमय ही है। यजुर्वेद का अधिकांश भाग गद्यमय है ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् आदि में भी गद्य पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है।

किन्तु साहित्यिक गद्य का रूप सुबन्धु, बाण और दण्डी की कृतियों में ही उपलब्ध है। प्राचीन भारतीय इतिहास में गुप्त साम्राज्य का काल भारतीय संस्कृति का स्वर्णयुग माना गया है। इस काल का प्रभाव सम्राट हर्षवर्धन तक पूर्णतया विद्यमान था।

महाकवि कालिदास, वाराह मिहिर, आर्यभट्ट, हरिषेण आदि गुप्त काल में विशिष्ट विभूतियाँ हैं। तत्पश्चात् भारतीय संस्कृति का पोषण प्रकाण्ड विद्वानों की परम्परा का वाहक महाकवि

बाणभट्ट संस्कृत साहित्याकाश के देदीप्यमान नक्षत्र की भाँति उदित हुआ। गद्य कवियों में बाणभट्ट विशिष्ट व्यक्तित्व तथा महाकवि के रूप में समाहत है।

बाणभट्ट महाकवि बाणभट्ट द्वारा प्रणीय कादम्बरी संस्कृत गद्य साहित्य की एक अमर रचना है। बाणभट्ट भारतीय संस्कृति के वाहक एवं पोषक वैदिक विद्वानों की वंश परम्परा में उत्पन्न हुए हैं। उन्होंने अपनी कादम्बरी में भारतीय वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों का पर्याप्त मात्रा में समावेश किया है। मैं महाकवि कालिदास के साथ ही संस्कृत गद्य साहित्य में बाणभट्ट का स्थान सर्वोपरि मानती हूँ तथा उनकी प्रधान रचना कादम्बरी को संस्कृत गद्य साहित्य की सर्वोत्तम कृति स्वीकार करती हूँ। इसी आधार पर मैंने “कादम्बरी पर वैदिक प्रभाव” नामक शीर्षक पर शोधकार्य करने का संकल्प किया तथा मेरे शीर्षक को गुरुकुल विश्वविद्यालय की विद्वत्परिषद् ने स्वीकृति प्रदान कर मेरी उत्साहवृद्धि की है।

इस शोध प्रबन्धक को नौ अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय में वैदिक साहित्य का परिचय प्रस्तुत किया गया है। पतंजलि रचित वैयाकरणमहाभाष्य में ऋग्वेद की इक्कीस, शुक्लयजुर्वेद की १६, कृष्णयजुर्वेद की ८५, सामवेद की १००० तथा अथर्ववेद की ६६ शाखाओं का उल्लेख है किन्तु वर्तमान में १३ शाखाएँ ही उपलब्ध हैं। बाह्यग्रन्थों में १६ ब्राह्मण पाये गये हैं। इसके साथ ११ आरण्यक, १५ श्रौतसूत्र, १६ गृह्यसूत्र, ८ उपनिषद् ५ धर्मसूत्र तथा १० उपवेदों का साहित्य वर्तमान है इस साहित्य में संस्कृति, यज्ञ-समाज, शासन आदि से सम्बद्ध अनेक विषयों पर विचार किया गया है। उपनिषद् भारतीय दर्शन की अमूल्य निधि हैं। इनके तत्त्व ज्ञान ने विश्व के समाज के सभी धार्मिक विद्वानों को विशेष प्रभावित किया है।

प्रथम अध्याय -

प्रथम अध्याय में ही बाणभट्ट के वंश, बाणभट्ट के जीवन, शिक्षा, उसका सम्राट हर्ष वर्धन की राज्यसभा में प्रवेश, उनके द्वारा हर्षचरित तथा कादम्बरी की अपूर्ण रचना, उनके पुत्र भूषण भट्ट द्वारा इसे पूर्णता प्रदान करना तथा संस्कृतगद्य साहित्य में कादम्बरी के स्थान का निर्धारण भी किया गया है।

द्वितीय अध्याय-

द्वितीय अध्याय में कादम्बरी की कथा में दार्शनिक तत्वों के समावेश का विचार किया गया है। कादम्बरी का कथानक शूद्रक की राज्य सभा में वैशम्पायन शुक (तोते) के मुख से प्रारम्भ होता है, फिर महर्षि जाबालि उस सूत्र को आगे बढ़ाते हैं। एक सामान्य प्रेम कथा को विशेष दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। महाश्वेता और कादम्बरी अपने प्रणयी की प्रतीक्षा जन्म जन्मान्तर तक करती रहती है। कर्मानुसार जन्म ग्रहण तथा पुनर्जन्म का सिद्धान्त, मानवोचित चपलता वश पुण्डरीक तथा वैशम्पायन का शापग्रस्त होना, तपस्या द्वारा शाप से उद्धार, महर्षि श्वेतकेतु का कथान्त में सत्यलोक प्राप्ति हेतु गमन जीवात्मा का मोक्ष के प्रति प्रयास ही है। मनुष्य का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष है। यही कादम्बरी का दार्शनिक सन्देश है।

तृतीय अध्याय-

तृतीय अध्याय में कादम्बरी पर वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था का प्रभाव है। बाणकालीन भारत में समाज में वर्णाश्रम व्यवस्था पूर्णतया विद्यमान थी। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि के कर्तव्य, आचरण तथा समाज में स्थान का निरूपण किया गया है। मंत्री शुकनास, महर्षि जाबालि, महर्षि श्वेतकेतु उन्नत ब्राह्मण परम्परा के प्रतीक हैं। महाराज तारापीड़, शूद्रक, चन्द्रापीड़ आदि को क्षत्रिय समाज के प्रतीक रूप में वर्णित किया है। विद्याग्रहण निमित्त ब्रह्मचर्याश्रम प्रवेश का निर्देश चन्द्रापीड़ के विद्यालय प्रवेश में किया गया है।

चतुर्थ अध्याय -

चतुर्थ अध्याय में कादम्बरी पर वैदिक शिक्षा व्यवस्था का प्रभाव दर्शाया गया है। हर्ष के समय में नालन्दा महाविहार एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था, इसका समारम्भ सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के पुत्र कुमार गुप्त ने किया था, सम्राट ने २०० ग्राम दान देकर इसको सुव्यवस्थित करने में योगदान किया था। चीनी यात्री ह्वानसांग ने नालन्दा विहार का विशेष उल्लेख किया है। महर्षि अगस्त्य तथा महर्षि जाबालि के आश्रमों का वर्णन, बाणभट्ट के पूर्वज कुबेर, अर्थपति तथा चित्रभानु के यहाँ दूर दूर के समागत शिष्यों का शिक्षा ग्रहण, वेदमंत्रों का गान आदि से कादम्बरी पर वैदिक शिक्षा व्यवस्था तथा चन्द्रापीड द्वारा वेद, अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, व्यायाम अर्थशास्त्र शिल्प आदि विद्याओं का विशद् उल्लेख पूर्वक विचार किया गया है।

पंचम अध्याय-

“कादम्बरी पर वैदिक पारिवारिक आदर्शों का प्रभाव” शीर्षक पर विचार किया गया है। वैदिक काल में समाज में परिवार में पिता का स्थान, अधिकार एवं कर्तव्य विशेष थे। पूर्व वैदिक काल में विश या कबीला एक परिवार होता था। विश के सभी सदस्य कृषि या आक्रमण द्वारा जो पूँजी एकत्र करते थे वह सभी की सम्पत्ति होती थी तथा सभी उस का उपयोग करते थे। बाणभट्ट कालीन भारत में परिवार छोटे थे, एक से अधिक विवाह की प्रथा थी। शुक्नास की ज्येष्ठ ब्राह्मण पत्नी से वैशम्पायन के जन्म का वर्णन, परिवार में स्त्री का स्थान, सन्तान के प्रति उत्कण्ठा आदि को इंगित किया गया है।

षष्ठ अध्याय -

षष्ठ अध्याय में कादम्बरी में वर्णित तपोवनों और आश्रमों पर वैदिक प्रभाव का विचार किया गया है। कादम्बरी में महर्षि अगस्त्य, महर्षि जाबालि तथा गन्धर्व कन्या महाश्वेता के तपोवन का वर्णन किया गया है जिनमें महर्षि जाबालि के आश्रम का विशद् वर्णन है, इनमें वहाँ छात्रों का वेद पाठ, वन से समिधा, कन्द फल, कुश आदि का लाना, ऋषियों की तपसाधना, तपोवन

में सिंह, मृगा, मोर, सर्प आदि का परस्पर वैर भुलाकर सह विचरण, सादा जीवन उन्नत जीवन लक्ष्य आदि परिलक्षित होता है। महाश्वेता का आश्रम भी अत्यन्त पावन एवं वासना मुक्त है। वहाँ पर वृक्ष स्वयं ही उसकी आवश्यकता पर फल भेंट कर देते हैं। अच्छोदसरोवर भी तपोवन का ही अंग है। इन पर वैदिक कालीन महर्षि वसिष्ठ आदि के तपोवन का प्रभाव परिलक्षित होता है।

सप्तम अध्याय-

सप्तम अध्याय में कादम्बरी में वैदिक जीवन मूल्यों का विचार किया गया है। भारतीय संस्कृति में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, शौच, ब्रह्मचर्या आदि को विशेष महत्व दिया गया है। चन्द्रापीड़ को दिया गया शुकनासोपदेश एक उच्च कोटि के आदर्शों की शिक्षा प्रदान करता है।

अष्टम अध्याय -

अष्टम अध्याय में कादम्बरी में वैदिक संस्कार एवं पंचम महायज्ञों का विचार किया है। उस समय वैदिक कालीन गर्भाधान, पुंसवन, नामकरण आदि से अन्त्येष्टि तक षोडश संस्कारों का प्रचलन था यद्यपि कादम्बरी में जातकर्म, नामकरण, उपनयन, समावर्तन आदि संस्कारों का यथा स्थान वर्णन है गर्भाधान पुंसवन आदि का वर्णन नहीं है तथापि तत्कालीन संस्कारों के प्रति जागरूकता को सामान्यतया दर्शाया है। महाराज तारापीड़ का वानप्रस्थ ग्रहण तथा महर्षि श्वेतकेतु अधिक उन्नति शील सिद्धि के प्रतिगम मोक्ष की कामना को दर्शाता है। वेदों में सन्ध्या तर्पण, बलिवैश्वदेव, दैनिक यज्ञ तथा अतिथि सेवा आदि पंचमहायज्ञों को जीवन का अनिवार्य अंग बताया गया है। राजा को वर्णाश्रम व्यवस्था का नियामक बताया गया है तथा हारीत आदि के चरित्र में दैनिक स्नान, पूजन, सूर्योपस्थान गायत्री जप आदि का निरूपण कर तथा महाश्वेता द्वारा चन्द्रापीड़ का आतिथ्य, पंच महायज्ञों की महत्ता पर बल दिया है। संस्कारों तथा पंचमहायज्ञों का परस्पर सम्बन्ध भी अध्याय में वर्णित है।

नवम अध्याय-

कादम्बरी में बाणभट्ट द्वारा वर्णित प्रेम और सौन्दर्य पर वैदिक प्रभाव को दर्शाया गया है। महाश्वेता और पुण्डरीक का प्रणय प्रथम दृष्टि में शारीरिक सौन्दर्य पर आधारित प्रतीत होता है। कादम्बरी और चन्द्रापीड़ का प्रणय सम्बन्ध इसी पर आश्रित है किन्तु उसमें बाह्य सौन्दर्य के साथ उनके शील, संयम, सौम्यशान्त व्यक्तित्व का भी प्रभाव है। प्रणय का आरम्भ कन्या की ओर से प्रारम्भ होता है तथा पर्वराग अभिलाषा मिलन को पार कर बीच में ही बाधित हो जाता है। पुण्डरीक और चन्द्रापीड़ के प्राण त्याग को दर्शाकर काम की दशों दशाओं का वर्णन बाणभट्ट ने किया है किन्तु उन दोनों के पुनर्मिलन का दिव्य पुरुष की वाणी द्वारा सन्देश मिलने पर ये दोनों तपःसाधनामय जीवन यापन कर “तपसा ब्रह्मचर्येण देवामृत्युमपाधन्त” के अनुसार मृत्यु को जीतकर पुनर्जीवन प्राप्त कर प्रणय की साधना का लक्ष्य पा लेती है तथा वातावरण आनन्दमय हो जाता है। बाणभट्ट के प्रणय का वर्णन आदर्श मूलक है। पुण्डरीक या चन्द्रापीड़ या शूद्रक अपनी प्रथम प्रणय के अतिरिक्त किसी दूसरी सुन्दरी को स्वीकार नहीं करते तथा कादम्बरी और महाश्वेता अपने प्रणयी की पर्याप्त समय तक प्रतीक्षा के पश्चात् अपने लक्ष्य की पूर्ति प्राप्त कर कृतकृत्य हो जाते हैं। काव्य का प्रयोजन भी ब्रह्मानन्द सहोदर रस परिपाक ही है। कालिदास के दुष्यन्त या पुरुरवा की भाँति बाणभट्ट के नायक नायिका अनन्य निष्ठप्रेम को स्वीकार करते हैं। बाणभट्ट ने नखशिखादि अंग प्रत्यंग के सौन्दर्य का वर्णन करने के साथ ही अपने पात्रों के शील, संयम, दया, उदारता, धैर्य आदि का वर्णन एवं परिणति दर्शाकर वैदिक नारी अनुसूया सावित्री, सीता आदि तथा राम, कृष्ण, अत्रि, वसिष्ठ आदि के चरित्र की उदात्तता को भी प्रदर्शित किया है। इसी आधार पर कादम्बरी को एक लोकोत्तर कृति या देश काल की सीमा से परे विश्वसाहित्य की अनुपम कृति के रूप में स्वीकृति को मान्यता मिली है। बाणभट्ट के पात्र सामान्य धरातल पर जन्म लेने पर भी अपने संयम, सदाचार, धैर्य, स्थिरता एवं दृढ़ता आदि अमूल्य

The first part of the paper is devoted to a discussion of the general principles of the theory of the structure of the atom. It is shown that the structure of the atom is determined by the laws of quantum mechanics, and that the laws of quantum mechanics are in agreement with the experimental facts. The second part of the paper is devoted to a discussion of the structure of the nucleus. It is shown that the structure of the nucleus is determined by the laws of quantum mechanics, and that the laws of quantum mechanics are in agreement with the experimental facts. The third part of the paper is devoted to a discussion of the structure of the molecule. It is shown that the structure of the molecule is determined by the laws of quantum mechanics, and that the laws of quantum mechanics are in agreement with the experimental facts. The fourth part of the paper is devoted to a discussion of the structure of the crystal. It is shown that the structure of the crystal is determined by the laws of quantum mechanics, and that the laws of quantum mechanics are in agreement with the experimental facts. The fifth part of the paper is devoted to a discussion of the structure of the liquid. It is shown that the structure of the liquid is determined by the laws of quantum mechanics, and that the laws of quantum mechanics are in agreement with the experimental facts. The sixth part of the paper is devoted to a discussion of the structure of the gas. It is shown that the structure of the gas is determined by the laws of quantum mechanics, and that the laws of quantum mechanics are in agreement with the experimental facts. The seventh part of the paper is devoted to a discussion of the structure of the plasma. It is shown that the structure of the plasma is determined by the laws of quantum mechanics, and that the laws of quantum mechanics are in agreement with the experimental facts. The eighth part of the paper is devoted to a discussion of the structure of the solid. It is shown that the structure of the solid is determined by the laws of quantum mechanics, and that the laws of quantum mechanics are in agreement with the experimental facts. The ninth part of the paper is devoted to a discussion of the structure of the liquid crystal. It is shown that the structure of the liquid crystal is determined by the laws of quantum mechanics, and that the laws of quantum mechanics are in agreement with the experimental facts. The tenth part of the paper is devoted to a discussion of the structure of the superconductor. It is shown that the structure of the superconductor is determined by the laws of quantum mechanics, and that the laws of quantum mechanics are in agreement with the experimental facts.

गुणों के कारण अलोक सामान्य दिव्यलोक के प्राणी जान पड़ते हैं। अपने लक्ष्य की पूर्ति एवं आदर्शों की प्रतिष्ठा में महाकवि बाणभट्ट एवं उनके योग्य पुत्र भूषणभट्ट को पूर्णसफलता प्राप्त हुई है। इसी कारण भूषणभट्ट की यह पंक्ति सर्वथा श्लाघनीय है कि-

कादम्बरी रसभरेण समस्त एव

मत्तो न चेतयते किञ्चिपि जनोऽयम्॥

अर्थात् कादम्बरी रूपी सुरा के मदभार के समान कादम्बरी के कथा रस में पूर्णतया मग्न होकर यह सामाजिक प्राणी पूर्णतया सामान्य चेतना से परे हो जाता है तथा उसे अपने शरीर आदि का ध्यान भूल जाता है।

इसीकारण महाकवि सोङ्गल ने बाण की प्रशंसा में निम्नभाव व्यक्त किये हैं-यथा

वाणीश्वर हन्तभजेऽभिनन्दं

अर्थेश्वरं वाग्पति राजमीडे।

रसेश्वरं स्तौमि च कालिदासं

वाणं तु सर्वेश्वरं मानतोऽस्मि॥

अर्थात् सुन्दर शब्द विन्यास में कुशल अभिनन्दनामा कवि की प्रशंसा करता है। उचित अर्थ विन्यास में प्रवीण वाग्पति राज की स्तुति करता हूँ। काव्य के प्राणभूत रस के प्रयोग में निपुण महाकवि कालिदास की स्तुति करता हूँ किन्तु शब्द, अर्थ, तथा रसादि सभी अंगों के प्रयोग के अनुपम चितेरे बाणभट्ट को पूर्णरूप से प्रणाम करता हूँ।

बाणभट्ट सदृश महाकवि इस नश्वर संसार में दर्शन कर अपनी विलक्षण प्रतिभा द्वारा शाश्वत साहित्यिक पुष्प की मादक सुगन्धि छिटका कर सभी को रसविभोर कर देते हैं तथा स्वयं भी अमर हो जाते हैं।

ऐसे ही कवियों की प्रशंसा में भृत्हरि ने निम्न श्लोक प्रस्तुत किया है।

जयन्ति व सुकृतिनो रससिद्धा कवीश्वराः।

नास्तियेषां यशःकाये जरामरणजं अयम्॥

पवित्रकर्मा रस सिद्ध महाकवि संसार में अवश्यमेव अतिशय उत्कर्ष से युक्त एवं प्रशंसनीय हैं जिनके यश रूपी शरीर में वृद्धावस्था या मृत्यु का कोई भय नहीं व्याप्त होता है। इसी प्रकार महाकवि बाणभट्ट अनन्त काल तक अपनी अनुपम रचना कादम्बरी के द्वारा समाज में वन्दनीय रहेंगे एवं विलक्षण प्रतिभा के लिए स्मरण किये जाते रहेंगे। आशा है कि मेरा यह प्रयास संस्कृत साहित्य के विज्ञ समाज द्वारा स्वीकृत एवं मान्य होगा।

Suman

क्षमाप्रार्थिनी

सुमन चावला

